इकाई 11 भारत तथा मध्य एशिया और पश्चिम एशिया

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 परिचय

11.2 मध्य एशियाः एक पृष्ठभूमि

- 11.2.1 अर्थव्यवस्था
- 11.2.2 राजनीति और समाज
- 11.2.3 भू–सामरिक महत्व

11.3 भारत और मध्य एशिया

- 11.3.1 द्विपक्षीय संबंध
- 11.3.2 सुरक्षा चिंताएं
- 11.3.3 आर्थिक सहयोग
- 11.3.4 सांस्कृतिक संबंध
- 11.3.5 आर्थिक सहयोग में बाधाएं

11.4 पश्चिम एशियाः एक पृष्ठभूमि

- 11.4.1 भू–रणनीतिक परिदृश्यः पश्चिम एशिया में युद्ध और संघर्ष

11.5 भारत और पश्चिम एशिया

- 11.5.1 भारत की 'पूर्व की ओर देखो (लुक वेस्ट)' नीति
- 11.5.2 भारत की लैंडमार्क (स्थलचिन्ह) नीति

11.6 सारांश

11.7 कुछ उपयोगी संदर्भ

11.8 उत्तर आपकी प्रगति अभ्यास की जांच करने के लिए

11.0 उद्देश्य

मध्य एशिया और पश्चिम एशिया दो अलग–अलग क्षेत्र हैं। इस इकाई में हम भारत के साथ मध्य एशिया और पश्चिम एशिया जैसे दो अति महत्वपूर्ण क्षेत्रों के संबंधों के बारे में पढ़ेंगे। ये दोनों ऊर्जा समृद्ध और भारत के 'विस्तारित पड़ोसी देश भी हैं। अर्थात उनकी स्थिरता और समृद्धि भारत की सुरक्षा एवं आर्थिक विकास के लिए अनिवार्य है। इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप कुछ महत्वपूर्ण बिंदु को करने में सक्षम हो सकेंगे :

- दोनों क्षेत्रों के भूगोल, संसाधनों, अर्थव्यवस्था, राजनीति और वहां के समाज का अवलोकन प्राप्त कर पाएंगे;
- भारत के लिए मध्य एशिया और पश्चिम एशिया के भू–राजनीतिक और भू–आर्थिक महत्व को समझ पाएंगे;

- भारत की सुरक्षा संबंधी चिंताओं व उसकी आर्थिक हितों के बारे में जान पाएंगे; और
- महत्वपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों का विश्लेषण कर सकेंगे।

11.1 परिचय

आज की दौर में मध्य एशिया और पश्चिम एशिया दो महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं । दोनों क्षेत्रों में दो तिहाई से भी अधिक तेल भंडार और प्राकृतिक गैस की अत्यधिक मात्रा है, जो आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं। तेल आयात भारत की तेल खपत का लगभग दो तिहाई है और इसका आधे से अधिक हिस्सा मुख्य रूप से फारस की खाड़ी से आता है। पश्चिम एशिया भारत का सबसे बड़ा तेल आपूर्तिकर्ता देश रहा है; और तेल की बढ़ती घरेलू खपत को देखते हुए ही उसकी यह निर्भरता बढ़ रही है। संक्षेप में, पश्चिम एशिया भारत की ऊर्जा संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है।

भौगोलिक रूप से, मध्य और पश्चिम एशियाई क्षेत्र एशियाई भूभाग को यूरोप और अफ्रीका से जोड़ते हैं। ऐतिहासिक रूप से, प्रमुख व्यापार मार्गों को उन्होंने पार कर लिया है। आक्रमणकारी मध्य एशिया और अफगानिस्तान से आये थे और उन्होंने भारत में मजबूत और समृद्ध साम्राज्यों का निर्माण किया। हाल के दिनों में यह क्षेत्र धार्मिक चरमपंथ और आतंकवाद से घिरा हुआ है जिसका क्षेत्रीय स्थिरता और भारत की सुरक्षा पर प्रभाव पड़ता है। पाकिस्तान द्वारा इन देशों में अपना वर्चस्व बनाए रखने की कोशिश भारत की सुरक्षा चिंताओं को और बढ़ा रही है। मध्य और पश्चिम एशियाई क्षेत्रों को विदेश नीति प्रतिष्ठान द्वारा भारत के 'विस्तारित पड़ोस' के रूप में वर्णित किया गया है।

मध्य एशिया और पश्चिम एशिया दोनों इस इकाई में शामिल हैं। बेशक कुछ समानताएं होते हुए भी यह दोनों क्षेत्र बहुत अलग हैं। इसलिए, इस इकाई में हम दो बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्रों का भारत के साथ उनके संबंधों का अलग से वर्णन व विश्लेषण करेंगे ।

11.2 मध्य एशियाः एक पृष्ठभूमि

मध्य एशिया में कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान के पांच गणराज्य शामिल हैं। 1991 में सोवियत संघ के पतन के बाद ये पांचों राष्ट्र स्वतंत्र राज्य के रूप में उभरे। मध्य एशिया लगभग 4 मिलियन वर्ग किलोमीटर में फैला एक विशाल भौगोलिक क्षेत्र है और इसकी कुल आबादी 70 मिलियन है। मध्य एशिया की निर्णायक विशेषता इसका स्थानः लैंडलॉक और पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण एशिया के चौराहे है। ऐतिहासिक रूप से यह प्रमुख चीनी, स्लाव, तुर्किक, फारसी एवं भारतीय विश्व सभ्यताओं का क्षेत्र रहा है । वर्तमान समय में यह रूस और चीन के साथ–साथ अफगानिस्तान–पाकिस्तान क्षेत्र की सीमाओं से भी जुड़ा हुआ है।

मध्य एशिया हाइड्रोकार्बन संसाधनों से समृद्ध है। कजाखस्तान अनुमानित 30 बिलयन बैरल वाला बारहवां सबसे बड़ा सिद्ध तेल भंडार देश है; तुर्कमेनिस्तान की प्राकृतिक गैस 265 ट्रिलियन क्यूबिक फीट आंकी गई है। उज्बेकिस्तान गैस का निर्यात भी करता है; अधिक महत्वपूर्ण यह है कि यहाँ यूरेनियम और सोने का भंडार भी अत्यधिक है।

ताजिकिस्तान और किर्गिस्तान में हाइड्रोकार्बन की कमी है लेकिन इसमें हाइड्रो–इलेक्ट्रिक क्षमता की प्रचुरता है।

धार्मिक पुनरुत्थानवाद और कट्टरपंथ मध्य एशिया के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है । मध्य एशियाई की जनता सोवियत कम्युनिस्ट की नास्तिकता और धार्मिक स्वतंत्रता के दमन को 70 से अधिक वर्षों तक सहने के बाद अब इस्लाम की ओर उनका झुकाव बढ़ रहा हैं। जारिस्ट रूस और कम्युनिस्ट रूस दोनों ने मध्य एशियाई के 'रसीकरण नीति' का पालन किया था। जाति और रूसी भाषा दोनों हीं शासन और संस्कृति के क्षेत्रों में प्रमुख रहे हैं। उनके गठन के बाद से सभी पांच मध्य एशियाई गणराज्य मजबूत और दमनकारी सत्तावादी शासनों से स्वतंत्र हैं । स्वतंत्रता और प्रतिनिधित्व के लिए लोगों की आकांक्षा को लोहे के हाथ से कुचल दिया गया। कोई भी परिस्थितियों में इस्लामी आतंकवादी गतिविधियों के खतरे को बट्टा नहीं दे सकता था। कट्टरपंथी और आतंकवादी समूह को अफगान–पाकिस्तान क्षेत्र से बाहर काम करने के लिए कहा गया ।

11.2.1 अर्थव्यवस्था

तेल और प्राकृतिक गैस के अलावा, मध्य एशिया कपास, ऊन, मांस, पशुओं की खाल और चमड़े के सामान जैसे उत्पादों का एक प्रमुख उत्पादक और निर्यातक है । इसमें यूरेनियम, सोना, चांदी, लौह अयस्क, कोयला, तांबा, जस्ता, सीसा और मैंगनीज जैसे खनिजों का भी काफी भंडार है । सोवियत संघ के विघटन ने इन संसाधनों के बाजारों को कम कर दिया है। साथ ही, इस क्षेत्र ने इन संसाधनों का दोहन और निर्यात करने के लिए प्रबंधकीय और कुशल जनशक्ति खो दी ।

सामाजिक–आर्थिक विकास के क्षेत्र में इन देशों का प्रदर्शन मिला–जुला रहा है। अपने महत्वपूर्ण निर्यात राजस्व के कारण कजाखस्तान दूसरों की तुलना में बेहतर है। तुर्कमेनिस्तान गैस के निर्यात करता है । सीमित संसाधनों के कारण किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान यह दोनों पिछड़ जाते हैं । उज्बेकिस्तान अपने केंद्रीय स्थान (अन्य सभी मध्य एशियाई राज्यों और अफगानिस्तान के साथ सीमा होने), बड़ी आबादी और पारंपरिक रूप से मध्य एशियाई सभ्यता और राज्य के केंद्र रहा है ।

11.2.2 राजनीति और समाज

मध्य एशियाई गणराज्य निरंकुश राष्ट्रपतियों द्वारा शासित हैंय विधायिका और न्यायपालिका सर्वोच्च एवं स्वतंत्र नहीं हैं । व्यक्तिगत स्वतंत्रता सीमित हैंय और प्रेस स्वतंत्रता लगभग शून्य। Czarist रूस के तहत, मध्य एशिया अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाने में निरंतर संघर्ष कर रहा हैं। कई बार वे अपनी भाषा और संस्कृति के माध्यम से स्वयं की पहचान बनाने की कोशिश करते हैं। सोवियत युग के दौरान रूसी भाषा, लिपि और संस्कृति के वर्चस्व का उनकी भाषाओं और संस्कृतियों पर विकृत प्रभाव पड़ा है। कुल मिलाकर उनकी इस्लामिक और मध्य एशियाई पहचान का पुनरुद्धार हो रहा है । ताजिकिस्तान को छोड़कर बाकी सभी राज्य तुर्कभाषी हैं। निरंकुश शासकों को पैन–इस्लामिक और पैन–तुर्किक आंदोलनों के प्रसार का डर था। वे सोवियत युग के कम्युनिस्ट पार्टी के नेता एवं उनके राज्य तंत्र का हिस्सा थे। किसी भी गणराज्य ने लोकतंत्र या विकास की दिशा में कोई आंदोलन नहीं किया स पानी की कमी, अराजक सीमाएं, पर्यावरण क्षरण और पलायन मादक पदार्थों की तस्करी आदि अफगानिस्तान की कुछ प्रमुख समस्याएं रही है ।

11.2.3 भू–सामरिक महत्व

मध्य एशिया एशिया के मध्य में एक स्थल से घिरा हुआ क्षेत्र है। उन्नीसवीं शताब्दी में, यह दो विस्तारित साम्राज्यों – जारिस्ट रूस और ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य के लिए युद्ध का मैदान था। उसके बाद सत्ता के लिए 'महान खेल' शुरू हुआ। रूस, चीन, पश्चिम एशिया और यूरोप के चौराहे पर अपनी भू–रणनीतिक स्थिति और इसके हाइड्रोकार्बन और अन्य खनिज संसाधनों के कारण, यह क्षेत्र वैश्विक स्तर से महत्वपूर्ण रहा है। रूस, चीन, तुर्की, ईरान, भारत और पाकिस्तान इन्हें अक्सर ''न्यू ग्रेट गेम'' के रूप में जाना जाता है। समुद्र राज्य इन राज्यों को अपने पड़ोसियों, विशेष रूप से रूस से कमजोर बनाती है, जिसके माध्यम से अधिकांश मौजूदा व्यापार और पारगमन मार्ग और तेल पाइपलाइन गुजरते हैं। रूस पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिए वैकल्पिक पारगमन मार्गों की खोज उन्हें अपने अन्य पड़ोसियों – चीन, जापान और कोरिया की ओर देखने के लिए प्रेरित करती है। मध्य एशियाई गणराज्यों को रूस के साथ अपने सुरक्षा संबंधों को संतुलित करने के लिए अमेरिका के विकास और मित्रता के लिए निवेश और प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है। अमेरिका और उसके यूरोपीय सहयोगी शांति कार्यक्रम के लिए नाटो की भागीदारी के माध्यम से सुरक्षा सहयोग की पेशकश करते हैं। अमेरिका मध्य एशियाई गणराज्यों और अफगानिस्तान को चीन और रूस पर नजर रखने एवं दोनों देशों के बीच बढ़ती नजदीकियों के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मानता है। यह मध्य एशिया को आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में एक महत्वपूर्ण रंगमंच के रूप में भी देखता हैस मध्य एशिया में तुर्क भाषी आबादी के साथ तुर्की का अपना सांस्कृतिक विस्तार है। रूस और चीन इस क्षेत्र को अपनी रुचि का क्षेत्र मानते हैं। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) और यूरेशियन आर्थिक संघ (ईईयू) मध्य एशिया को चीनी और रूसी क्षेत्र में रखने का एक माध्यम हैं। मध्य एशिया रूस का 'रणनीतिक पिछवाड़ा' है जो इसे 'विदेश के निकट' के रूप में वर्णित करता है। मध्य एशिया में तुर्की, ईरान और पाकिस्तान जैसी अन्य क्षेत्रीय शक्तियां भी हैं। रुचि और क्षमता की विषमता है। और यह राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा का एक प्रमुख कारक भी है।

अपनी प्रगति अभ्यास की जांच करें 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दी गई जगह का उपयोग करें।

ii) अपने सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) मध्य एशिया के भू–रणनीतिक महत्व को समझाएं।

....

....

....

....

11.3 भारत और मध्य एशिया

1990 के दशक में मध्य एशियाई गणराज्यों के साथ संबंध बनाने में भारत ने देर कर दी । भारत राज्य–विनियमित अर्थव्यवस्था से उदारीकृत अर्थव्यवस्था में संक्रमण से जुड़ी घरेलू

आर्थिक कठिनाइयों से घिरा हुआ था। अपने गठन के तुरंत बाद मध्य एशियाई गणराज्यों को भी राजनीतिक अनिश्चितता का सामना करना पड़ा। भारत की मध्य एशिया तक सीधी भौतिक पहुंच नहीं है; और जिसके कारण मध्य एशिया के साथ मजबूत आर्थिक, वाणिज्यिक, ऊर्जा, पर्यटन संबंधों के निर्माण में एक बाधा साबित हुआ है। पाकिस्तान द्वारा इस तरह की सुविधा से इनकार करने और अफगानिस्तान में युद्ध की स्थिति के कारण भूमि व्यापार बाधित रहा । इसलिए व्यापार मध्य एशिया के साथ समय लेने वाले और महंगे मार्गों के माध्यम से – चीन या उत्तरी यूरोप और रूस के माध्यम से किया गया । भारत ने अंततः चाबहार के ईरानी बंदरगाह तक पहुंच हासिल करने और उसे विकसित करके एक सफलता हासिल की है। बंदरगाह मध्य एशिया, अफगानिस्तान और रूस के साथ अंतर्राष्ट्रीय उत्तर–दक्षिण परिवहन गलियारे (INSTC) के माध्यम से भारत के व्यापार को खोलता है – भारत ने अश्गाबात समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं

11.3.1 द्विपक्षीय संबंध

1991 में इन राष्ट्रों के उत्थान के तुरंत बाद द्विपक्षीय स्तर के संपर्क स्थापित हो गए थे। शिखर स्तर की कई बैठकें हुई हैं, जो भारत द्वारा इन देशों को दिए जाने वाले रणनीतिक महत्व को रेखांकित करती हैं। शिखर स्तरीय बैठकों के अलावा, दोनों पक्षों के अधिकारियों, व्यापार और सांस्कृतिक प्रतिनिधिमंडलों और वैज्ञानिकों और विद्वानों का नियमित दौरा होता रहा है। भारत द्वारा एक महत्वपूर्ण और निर्णायक पहल की गई जब प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने जुलाई 2015 में सभी पांच मध्य एशियाई गणराज्यों का दौरा किया, इसे रूस के ऊफा में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के साथ जोड़ा गया । एससीओ में शामिल होने का भारत का निर्णय मध्य एशिया के साथ भारत के जुड़ाव में एक नए स्तर का प्रतीक है। एससीओ का वार्षिक शिखर सम्मेलन भारत को इन देशों के नेताओं के साथ जुड़ने और उनके साथ द्विपक्षीय संबंध स्थापित करने एवं क्षेत्रीय हितों के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक नियमित मंच प्रदान करता है। यह आशा की जाती है कि भारत के साथ अब एससीओ में, रूस और चीन के अलावा सभी मध्य एशियाई गणराज्यों के साथ सुरक्षा, रक्षा, ऊर्जा और व्यापार में घनिष्ठ सहयोग स्थापित किया जाएगा। एससीओ एक राजनीतिक, सुरक्षा और आर्थिक समूह है इसके सदस्य चीन, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, रूस, ताजिकिस्तान, उजबेकिस्तान, भारत और पाकिस्तान हैं। भारत, भारत–ईईयू मुक्त व्यापार समझौते के प्रस्ताव पर रूस के नेतृत्व वाले यूरेशियन आर्थिक संघ (ईईयू) के साथ भी बातचीत कर रहा है। ईईयू की आबादी 183 मिलियन है और सालाना जीडीपी (पीपीपी) 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है। सदस्य देश हैं: आर्मेनिया, बेलारूस, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान और रूस।

भारत–किर्गिस्तान द्विपक्षीय संबंधः रक्षा सहयोग पर चार बुनियादी समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं; चुनाव के क्षेत्र में एक समझौता ज्ञापन और सहयोग समझौताय मानकों पर एक समझौता जो भारतीय मानक ब्यूरो और किर्गिस्तान के अर्थव्यवस्था मंत्रालय के बीच हस्ताक्षरित किया गया थाय और एक सांस्कृतिक सहयोग समझौता । दोनों देश संयुक्त सैन्य अभ्यास आयोजित करने पर भी सहमत हो गएय पहला 2015 में किर्गिस्तान के खंजर में आयोजित किया गया था ।

भारत–उज्बेकिस्तान द्विपक्षीय संबंधः उज्बेकिस्तान क्षेत्र और जनसंख्या के मामले में सबसे बड़ा देश है। यह अन्य सभी मध्य एशियाई राज्यों और अफगानिस्तान के सीमाओं से जुड़ा

क्षेत्र रहा है। खासी उज्बेक अल्पसंख्यक आबादी लगभग पूरे मध्य एशिया में पाई जाती है। भारत और उज्बेकिस्तान महत्वपूर्ण द्विपक्षीय और क्षेत्रीय मामलों पर चर्चा करते हैं, जैसे अफगानिस्तान की स्थिति । उनके विदेश कार्यालयों और संस्कृति और पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए तीन द्विपक्षीय समझौते हैं। 2014 में भारत ने उज्बेकिस्तान से 2,000 मीट्रिक टन यूरेनियम के आयात के लिए एक समझौते पर भी हस्ताक्षर किए हैं।

भारत–कजाकिस्तान द्विपक्षीय संबंधः दोनों देशों के बीच व्यापार, ऊर्जा, रक्षा, रेलवे और सुरक्षा मामलों में सहयोग बढ़ाने के लिए समझौते हुआ। दुनिया में यूरेनियम उत्पादक कजाकिस्तान ने 2015–19 के दौरान भारत को 5000 टन यूरेनियम की आपूर्ति करने पर सहमति जताई थी। दोनों देशों ने मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) की व्यवहार्यता पर भारत और यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन के बीच संयुक्त अध्ययन समूह की स्थापना की ।

भारत–तुर्कमेनिस्तान द्विपक्षीय संबंधः तुर्कमेनिस्तान भारत के लिए प्राकृतिक गैस का एक आपूर्तिकर्ता है। दोनों देशों के बीच 10 अरब डॉलर की तापी (तुर्कमेनिस्तान–अफगानिस्तान–पाकी) पर समझौता हुआ ।

भारत–ताजिकिस्तान द्विपक्षीय संबंधः भारत और ताजिकिस्तान ने आतंकवाद के खिलाफ अपने सहयोग को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया है, विशेष रूप से उनके पड़ोस से निकलने वाला–पाकिस्तान और अफगानिस्तान का स्पष्ट संदर्भ। अन्य क्षेत्रों के बीच संस्कृति और कंप्यूटरों में सहयोग के लिए समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए ।

11.3.2 सुरक्षा चिंताएं

मध्य एशिया और उसके आसपास के देशों में धार्मिक अतिवाद और आतंकवाद एक बड़ा खतरा है। कई देश इससे प्रभावित हुए हैं– कश्मीर में भारत, चेचन्या में रूस, झिंजियांग में चीन और फरगना घाटी में उज्बेकिस्तान और किर्गिस्तान। ताजिकिस्तान ने सरकार और इस्लामी उग्रवादियों के बीच एक लंबे समय से चले आ रहे गृहयुद्ध का सामना किया और उज्बेक राष्ट्रपति इस्लाम करीमोव फरवरी 1999 में एक युद्ध में बाल बाल बचे । तालिबान के तहत अफगानिस्तान ने ओसामा बिन लादेन के अल–कायदा को आश्रय दिया था। ऐसा माना जाता है कि पाकिस्तान विभिन्न प्रकार के इस्लामी उग्रवादी समूहों के लिए एक सुरक्षित पनाहगाह और प्रशिक्षण स्थल था। मध्य एशियाई राज्य 11 सितंबर 2001 (9/11) को अमेरिका में हुए आतंकवादी हमलों के बाद शुरू किए गए वैश्विक युद्ध (जीडब्ल्यूओटी) में आसानी से शामिल हो गए। उज्बेकिस्तान और किर्गिस्तान ने सैन्य ठिकानों की पेशकश की और कजाकिस्तान ने अन्य सुविधाएं दीं जब अमेरिका ने अक्टूबर 2001 में तालिबान शासन को उखाड़ फेंकने के लिए अफगानिस्तान में अपनी सेना भेजी। भारत ने अमेरिका, रूस, चीन, कजाकिस्तान और ताजिकिस्तान सहित कई देशों के साथ मिलकर आतंकवाद से लड़ने के लिए संयुक्त कार्य समूहों का गठन किया । इसके अलावा, ड्रग्स और हथियारों की तस्करी मध्य एशिया में एक और सुरक्षा खतरा है जो भारत की सुरक्षा को प्रभावित करते है ।

11.3.3 आर्थिक सहयोग

भारत और मध्य एशिया के राज्यों में संसाधन बंदोबस्ती, प्रबंधकीय और कुशल मानव संसाधन, और आशाजनक बाजारों के मामले में आर्थिक पूरकताएं हैं। मध्य एशिया भारत का मुख्य फार्मास्यूटिकल्स, चाय, मशीनरी और उपकरण एवं रेडीमेड वस्त्र का निर्यातक देश रहा

है। इस क्षेत्र से प्रमुख लोहा और इस्पात, सोना और चांदी, अलौह धातु और फाइबर का आयात किया जाता हैं। इन देशों में प्रबंधकीय और कुशल जनशक्ति की कमी है। भारत बैंकिंग, बीमा, निर्माण, तकनीकी शिक्षा और वित्तीय प्रबंधन और खनन जैसे क्षेत्रों में अपने पेशेवरों और कुशल जनशक्ति के साथ मध्य एशियाई देशों की मदद कर सकता है।

सहयोग के मुख्य क्षेत्र निम्नलिखित हैंः

ऊर्जाः भारत दुनिया में तीसरे सबसे बड़े ऊर्जा उपभोक्ता के रूप में उभरा है और एक अध्ययन के अनुसार, इसकी ऊर्जा खपत 6 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ़ रही है। देश अपनी पेट्रोलियम आवश्यकताओं का तीन–चौथाई आयात करता है। मध्य एशिया और कैस्पियन क्षेत्र तेल और प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के वैकल्पिक स्रोत के रूप में उभर रहे हैं। मध्य एशिया के कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उजबेकिस्तान में मुख्य तेल और गैस भंडार पाए जाते हैं। भारतीय तेल और प्राकृतिक गैस आयोग (ONGC) कजाकिस्तान में कैस्पियन सागर की परिधि में डार्कन और कुरमांगाजी अन्वेषण ब्लॉकों में तेल के पूर्वेक्षण में भाग लेने की तैयारी कर रहा है। भारत असिबेकमोला और कोझासाई प्राकृतिक गैस क्षेत्रों में उपस्थिति के लिए भी बोली लगाएगा। तुर्कमेनिस्तान, जिसके पास प्राकृतिक गैस का काफी भंडार है, अफगानिस्तान और पाकिस्तान से होते हुए भारत तक गैस पाइपलाइन बनाने के लिए इच्छुक है।

किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान के पास भारी जलविद्युत संसाधन हैं। ताजिकिस्तान में, क्षेत्र के प्रत्येक वर्ग किलोमीटर में 2 मिलियन किलोवाट घंटे तक के जल विद्युत संसाधन हैं, जो कि एक बहुत बड़ा आंकड़ा है। किर्गिस्तान सरकार छोटे और मध्यम आकार के जल विद्युत स्टेशनों को विकसित करने के लिए एक कार्यक्रम चला रहा है। विश्व इस प्रयास को भविष्य में भारत के वित्त और प्रौद्योगिकी स्रोत के रूप में देख रहा है और इसके अतिरिक्त जल विद्युत की आपूर्ति को एक बड़े बाजार के रूप में सामने लाना चाहता है ।

फार्मास्यूटिकल्स और स्वास्थ्य देखभालः भारत और मध्य एशिया के बीच सहयोग का एक अन्य प्रमुख क्षेत्र फार्मास्यूटिकल्स और स्वास्थ्य सेवा है। मुख्य रूप से अपनी दक्षता और लागत प्रभावशीलता के कारण, भारत को इस क्षेत्र में वैश्विक बाजार से प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त हुआ है। मध्य एशिया को दवा उत्पादों का निर्यात करने वाली कुछ भारतीय कंपनियां है जैसे क्लैरिस लाइफ साइंसेज, रैनबैक्सी, डॉ रेड्डीज, ल्यूपिन लेबोरेटरीज, यूनिक लैबोरेटरीज और अरबिंदो फार्मा आदि। इनमें से कुछ कंपनियां मध्य एशिया में ही विनिर्माण इकाइयां स्थापित करने की योजना बना रही हैं। कजाख–भारत संयुक्त उद्यम कजाकिस्तान फार्मा की फार्मास्युटिकल फैक्ट्री अल्माटी में पूरी होने की प्रक्रिया में है।

सहयोग के अन्य क्षेत्रः सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और तकनीकी प्रशिक्षण ऐसे क्षेत्र हैं जहां भारत मध्य एशियाई राज्यों में अपना पर्याप्त योगदान दे सकता है। इस संबंध में उज्बेकिस्तान, कजाकिस्तान और किर्गिस्तान के साथ पहले से ही समझौते किये गये हैं। भारत कजाकिस्तान में एक सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क का निर्माण कर रहा है। आईटी शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के लिए किर्गिस्तान और भारतीय कंपनी एडुराइट टेक्नोलॉजीज के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया हैं। प्ज्म्ब् कार्यक्रम के तहत भारत ने सभी मध्य एशियाई देशों को चयनित भारतीय संस्थानों में उनके उम्मीदवारों के प्रशिक्षण के लिए स्लॉट आवंटित किया हैं। पर्यटन, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, रक्षा सहयोग, खाद्य और कपास प्रसंस्करण, पर्यावरण संरक्षण, आपदा प्रबंधन और दूरसंचार आदि सहयोग के अन्य उभरते क्षेत्र हैं।

11.3.4 सांस्कृतिक संबंध

मध्य एशिया में भारत का सॉफ्ट पावर प्रिंट है। जिसका ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़ा हैं। कैस्पियन सागर के आसपास आर्यों प्रवासी के सिद्धांत पर भारत के इतिहासकारों द्वारा खोज जारी है। इस्लाम के आगमन से पहले इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म प्रमुख पंथ था। इस्लाम मध्य एशिया के रास्ते भारत आया। इसके साथ सूफीवाद, संगीत और साहित्य, वास्तुकला, व्यंजन और फैशन और सबसे ऊपर, विभिन्न मूल और जातीयता के लोग आए। लगभग एक शताब्दी तक, लोगों, वस्तुओं और विचारों का निरंतर प्रवाह आगे–पीछे होता रहा। मध्यकाल में व्यापार प्रवासी ताशकंद, बुखारा और अन्य स्थानों पर भारतीय मौजूद थे। भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की शुरुआत और 19वीं शताब्दी में मध्य एशियाई खानों की जारिस्ट विजय से इन आदान–प्रदानों को बाधित किया गया था।

भारत मध्य एशिया में कल्पना और साहित्य का हिस्सा बना हुआ हैय 1917 की सोवियत क्रांति और 1947 में भारत की स्वतंत्रता ने इनमें से कुछ संपर्कों को पुनर्जीवित और पुनः स्थापित करने में मदद की। भारत उन कुछ देशों में से एक था जिसे सोवियत संघ ने मध्य एशिया के साथ व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क रखने की अनुमति दी थी। भारतीय ने ताशकंद और अल्माटी में अपने वाणिज्य दूतावास बनाए रखे। महान भारतीय सूफी संत अमीर खुसरो उस समय के मुख्य कवि रहे है। भारतीय फिल्में और संगीत पूरे क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय हैं। भारत में बहुत सद्भावना है और यहाँ भारतीय आगंतुकों का गर्मजोशी से स्वागत किया जाता है।

भारत अध्ययन, प्रशिक्षण और मानव क्षमता के विकास के लिए इन देशों के छात्रों और युवा पेशेवरों को भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करता है। ITEC ने लाभार्थी देशों में आर्थिक और सामाजिक विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है। भारतीय कंपनियों के लिए रेलवे, सड़कों, राजमार्गों, बिजली स्टेशनों, पारेषण लाइनों, नवीकरणीय ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा आदि के निर्माण से संबंधित बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में भाग लेने की गुंजाइश है। इनमें से कुछ परियोजनाओं को अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों और एडीबी जैसे बहुपक्षीय बैंकों द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। EBRD, IBRD, IDB, AIIB और NDBA तेल और गैस, सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स और वस्त्र, और पर्यटन जैसे अन्य क्षेत्र हैं जिनमें सहयोग कि अधिक संभावनाएं हैं।

11.3.5 आर्थिक सहयोग में बाधाएं

काफी संभावनाओं के बावजूद, दोनों क्षेत्रों के बीच वास्तविक व्यापार और निवेश का स्तर बहुत कम रहा है। मध्य एशिया को संपूर्ण भारतीय निर्यात इसके कुल निर्यात के दो प्रतिशत से भी कम है जबकि आयात औसत आधार पर कुल भारतीय आयात का केवल 1.5 प्रतिशत है। भारत और मध्य एशिया के बीच आर्थिक सहयोग के रास्ते में मुख्य बाधाओं में से एक कठिन मुद्रा की अनुपलब्धता और रूपांतरण सुविधा सेवाओं की कमी रही है। मुद्रा की कमी को दूर करने के लिए, भारत ने मध्य एशियाई राज्यों में से प्रत्येक को ऋण दिया है। लेकिन इसका या तो पूरी तरह से उपयोग नहीं किया गया है या इसे अपर्याप्त माना जाता है। उचित सूचना चौनलों और तंत्रों का अभाव भी सहयोग को आगे बढ़ाने में एक बाधा रहा है। हालांकि, मध्य एशिया के साथ भारत के संबंधों में सीधी रेल, सड़क या समुद्री संपर्क की अनुपस्थिति सबसे महत्वपूर्ण बाधा रही है। काला सागर के माध्यम से मौजूदा मार्ग समय लेने वाला और महंगा

है, हालांकि समय परीक्षण और भरोसेमंद है। भारत के लिए सबसे छोटा और सबसे किफायती मार्ग ईरान के माध्यम से होगा। ईरान के पास सड़क और रेलवे के काफी अच्छे नेटवर्क हैं, जो तुर्कमेनिस्तान के माध्यम से मध्य एशिया से सीधे जुड़े हुए हैं। भारत ने मध्य एशिया और अफगानिस्तान के साथ व्यापार की सुविधा और उत्तर–दक्षिण परिवहन गलियारे तक पहुंच के लिए चाबहार के ईरानी बंदरगाह पर दो बर्थ का अधिग्रहण किया, जिसके माध्यम से भारतीय वस्तुओं का आदान प्रदान रूस तक आसानी से किया जा सकता है।

कुल मिलाकर, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध नाजूक बने हुए हैंय इन संबंधों को पूरी क्षमता के साथ अभी तक पूर्ण नहीं किया जा सका है। भूमि मार्ग का न होना एक बहुत बड़ी बाधा है। एससीओ (SCO) और ईईयू के माध्यम से भारत की सदस्यता को मध्य एशियाई गणराज्यों के साथ घनिष्ठ सहयोग की सुविधा मिलनी चाहिए।

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) मध्य एशिया के साथ भारत के आर्थिक संबंधों का विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

....

11.4 पश्चिम एशियाः एक पृष्ठभूमि

पश्चिम एशिया वर्तमान में दुनिया में सबसे अधिक अस्थिर और संघर्ष प्रवण क्षेत्र है। अतीत में इसने तीन महान धर्मों – यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम – और मानव इतिहास की कुछ महानतम सभ्यताओं – मिस्र और मेसोपोटामिया को देखा है । इस क्षेत्र में प्राचीन काल में बेबीलोनियन और ईरानी साम्राज्यों और मध्ययुगीन काल में अब्बासिद और ओटोमन साम्राज्यों के तहत उपलब्धि का उच्च वॉटरमार्क देखा गया। 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान तुर्क शक्ति के पतन के कारण ब्रिटिशों अधिक प्रभावित हुए, जो इसे अपने ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य की रक्षा के लिए ''पश्चिमी भाग'' के रूप में मानते थे। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में ईरान में तेल की खोज के साथ, फारस की खाड़ी के आसपास और अधिक महत्वपूर्ण खोजों के बाद, यह क्षेत्र पुरानी और साथ ही उभरती हुई महान शक्तियों के लिए रुचि का केंद्र बन गया।

11.4.1 भू–रणनीतिक परिदृश्यः पश्चिम एशिया में युद्ध और संघर्ष

पश्चिम एशिया में इस्लाम प्रमुख धर्म और पहचान है। हालांकि, इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण सांप्रदायिक और जातीय–सांस्कृतिक विविधता है। मोटे तौर पर, इस क्षेत्र में चार अलग–अलग जातीय–सांस्कृतिक समूह तुर्क, फारसी, अरब और इजरायल हैं। तुर्की और ईरान राज्यों में

अरब पश्चिम एशिया से लेकर उत्तरी अफ्रीका तक 20 से अधिक राज्यों फैले हुए हैं। इजराइल एक यहूदी राज्य है जो 1948 में अस्तित्व में आया था। जबकि ईरान, इराक और बहरीन में शिया बहुसंख्यक आबादी हैं, सुन्नी सभी अरब राज्यों में प्रमुख हैं। इन विभाजनों ने क्षेत्र में राजनीतिक तनाव और संघर्ष को जन्म दिया है। अरब क्षेत्र में भी प्रतिद्वंद्विता रही है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, मिस्र के जमाल अब्देल नासिर और बाथिस्ट सीरिया और इराक के नेतृत्व में धर्मनिरपेक्ष, उपनिवेशवाद विरोधी और सोवियत समर्थक अरब राजनीति पर हावी

हो गए। 1967 के अरब–इजरायल युद्ध में अरब की हार और 1973 में तेल की कीमतों में वृद्धि ने तेल–समृद्ध रूढ़िवादी खाड़ी राजशाही के राजनीतिक और आर्थिक उत्थान को देखा, जो अमेरिका के साथ घनिष्ठता के साथ जुड़े हुए हैं।

इस क्षेत्र में मुख्य संघर्ष अरब–फिलिस्तीनी के स्वतंत्र राज्य की मांग को लेकर रहा है। इसका इजरायल द्वारा विरोध किया जाता है जो उन पर आतंकवाद का आरोप लगाता है। सामान्य तौर पर अमेरिका और पश्चिम इजरायल इसके मुख्य समर्थक हैं। 1967 और 1973 के युद्धों में अरब की हार और इजरायल–फिलिस्तीनी वार्ता की विफलता को कई लोग इस क्षेत्र में आतंकवाद और धार्मिक उग्रवाद के उदय का मूल कारण मानते हैं। इसके अन्य कारक भी हैं, जैसे बढ़ती जनसंख्या, सामाजिक–आर्थिक ठहराव, और अधिकांश राज्यों में लोकप्रिय भागीदारी के लिए तंत्र का अभाव, जिसके कारण लोकप्रिय अलगाव हुआ है। इस क्षेत्र (मुस्लिम पवित्र स्थानों सहित) में प्रमुख अमेरिकी सैन्य द्वारा विश्व भर में मुस्लिम का गहरा विरोध किया गया है। इसने अमेरिका को सऊदी अरब से अपनी सेना वापस लेने के लिए प्रेरित किया है। फिलिस्तीनियों के बीच जारी विभाजन और इजराइल की हठधर्मिता ने एक कठिन स्थिति और निराशा को जन्म दिया है।

शीत युद्ध की समाप्ति ने पश्चिम एशिया में केवल युद्ध और विनाश उत्पन्न किया। सबसे पहले कुवैत पर इराकी आक्रमण और 1991 में पहला खाड़ी युद्ध हुआ । इसके बाद, यह गृहयुद्धों, बाहरी हस्तक्षेपों, शासन परिवर्तन में उलझे हुए देशों की एक लंबी सूची रही है, जिसमें शांति और सुरक्षा की कोई संभावना नहीं है। लगभग तीन दशकों से, पश्चिम एशिया में उच्च स्तर की राजनीतिक अस्थिरता, व्यवस्थाओं का टूटना और जबरन शासन परिवर्तन और विदेशी हस्तक्षेप की विशेषता रही है। सीरिया, इराक और यमन में आंतरिक सुरक्षा की स्थिति बहुत ही अनिश्चित बनी हुई है। क्षेत्रीय शक्तियाँ और स्थानीय संगठन सभी सांप्रदायिक और आदिवासी/जातीय आधार पर छद्म युद्ध लड़ रहे हैं, अपने पसंदीदा समूहों को धन और हथियार प्रदान कर रहे हैं। अमेरिका और रूस जैसे अतिरिक्त–क्षेत्रीय खिलाड़ी आंतरिक संघर्षों में शामिल हैं, प्रतिद्वंद्वी सांप्रदायिक और जातीय गुटों का समर्थन करते हैं, शासन बदलते हैं और अपनी पसंद के शासन को लागू करते हैं।

वास्तव में, पश्चिम एशिया में कई दोष–रेखाएं हैंः अरब/फिलिस्तीन बनाम इजरायल, सऊदी/जीसीसी बनाम ईरान, शिया बनाम सुन्नी, अमेरिका बनाम रूस, क्षेत्रीय बनाम अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्तियां, और उदारवादी बनाम कट्टरपंथी तत्व। इसका परिणाम अडिग संघर्ष और बड़े पैमाने पर अस्थिरता है। इन युद्धों और असंख्य संघर्षों का भारत की सुरक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ता है। भारत को अरब/फिलिस्तीन के साथ अपने पारंपरिक घनिष्ठ संबंधों और इजरायल के साथ उभरती साझेदारी, ईरान और सऊदी अरब के बीच और अनिश्चित सरकारों के बीच, उदाहरण के लिए, लीबिया और सीरिया और उनके विभिन्न सशस्त्र विरोधियों के बीच अच्छा संतुलन बनाना है।

अरब आबादी के विशाल समूह में अलगाव और निराशा की भावना है। अरब दुनिया में एक बड़ी युवा आबादी है, जिसे 'युवा उभार' कहा जाता है। इस युवा आबादी ने इंटरनेट और सोशल मीडिया को खुद को अभिव्यक्त करने और दूसरों तक पहुंचने का माध्यम पाया है। निरंकुश शासन, बुनियादी स्वतंत्रता से इनकार, खराब शासन, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी के उच्च स्तर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल की कमी और जीवन की उच्च लागत ने लोकप्रिय राजनीतिक उथल–पुथल पैदा की जिसे 'अरब स्प्रिंग' कहा जाने लगा। अरब वसंत 2010 में ट्यूनीशिया में लोकप्रिय विरोध के साथ शुरू हुआ। ट्यूनीशिया, मिस्र कुछ और जगहों पर व्यवस्थाएँ बदलीं। अरब पूरी तरह से स्थापित नहीं हों पाएय उदार लोकतंत्र किसी एक देश में नहीं आया। यह एक हीं वर्ग में वापस आ गया है। बल्कि, संपूर्ण समाज ऐसा लगता है कि लीबिया, सीरिया, इराक, लेबनान, यमन राजनीतिक अराजकता और निरंकुश शासन में वापस आ गए हैं। यह उन लोगों के लिए एक अंतहीन दुःस्वप्न है जो लगातार हिंसा और युद्ध कर रहे हैं और विदेशी शक्तियों की भागीदारी को आगे बढ़ा रहे हैं।

11.5 भारत और पश्चिम एशिया

पश्चिम एशिया भारत के 'विस्तारित पड़ोस' का हिस्सा है। यह क्षेत्र अपनी भौगोलिक निकटता और ऐतिहासिक–सांस्कृतिक संबंध, ऊर्जा आपूर्ति, भारत के प्रवासी श्रमिकों के साथ–साथ वर्तमान सुरक्षा चिंताओं और आर्थिक हितों के कारण भारत के लिए महत्वपूर्ण है। कुछ मुख्य आर्थिक और सुरक्षा संबंधी मुद्दे निम्नलिखित हैं।

तेल की आपूर्तिः इस क्षेत्र से आयात की भारी निर्भरता को देखते हुए भारत के आर्थिक स्वास्थ्य के लिए उचित मूल्य पर तेल की निर्बाध आपूर्ति महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में कोई भी संघर्ष, जैसे कि अरब–इजरायल युद्ध, ईरान–इराक युद्ध और कुवैत संकट, तेल की आपूर्ति औरध्या कीमतों में वृद्धि को बाधित कर सकता है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त बोझ बढ़ सकता है।

प्रेषणः खाड़ी क्षेत्र में सात मिलियन से अधिक भारतीय प्रवासी कामगार हैं। उनका 80 बिलियन अमेरिकी डॉलर का वार्षिक प्रेषण देश के लिए विदेशी मुद्रा आय का उच्चतम स्रोत है। भारत दुनिया में शीर्ष प्रेषण प्राप्त करने वाला देश है। विशाल भारतीय समुदाय की सुरक्षा भारत के लिए एक प्रमुख प्राथमिकता है। इस क्षेत्र में या इन देशों के साथ भारत के संबंधों में किसी भी तरह के तनाव इन प्रवासी कामगारों और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए भी नकारात्मक परिणाम हो सकता हैं। इसके अलावा, हिंसा और अस्थिर राजनीतिक स्थिति को देखते हुए, भारत को अपने हजारों नागरिकों को संघर्ष क्षेत्रों से निकालने के लिए आकस्मिक योजनाओं के साथ तैयार रहना होगा।

धार्मिक अतिवादः धार्मिक कट्टरवाद का उदय और जिहादी कट्टरवाद और आतंकवाद के रूप में इसकी राजनीतिक अभिव्यक्ति भारत के लिए गंभीर चिंता का विषय है। भारत की बड़ी मुस्लिम आबादी है और कश्मीर में उग्रवाद जारी है। भारत को अपनी मुस्लिम आबादी के वर्गों के कट्टरपंथ का डर है। पाकिस्तान, पान–इस्लामवाद के नारे के तहत, स्थिति का फायदा उठाने की कोशिश करता है। यह OIC – इस्लामिक सहयोग संगठन – द्वारा कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान के रुख के साथ दिखाई गई सहानुभूति से इसका सबूत है।

वाणिज्यिक संपर्क और व्यापार मार्ग: भारत पश्चिम एशिया के साथ पर्याप्त व्यापार करता है। भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण ने इन वाणिज्यिक संबंधों को और बढ़ावा दिया है। इस क्षेत्र का भारत के वैश्विक व्यापार में 25 प्रतिशत से अधिक का योगदान है। प्रमुख आयात हाइड्रोकार्बन हैं जबकि गेहूं, गैर–बासमती चावल, कपड़ा, और इंजीनियरिंग और निर्मित सामान मुख्य निर्यात हैं। भारतीय निर्माण कंपनियों को इस क्षेत्र में ठेके मिले हैं। फारस की खाड़ी और स्वेज नहर मुख्य जलमार्ग हैं जिनके माध्यम से भारत का अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय व्यापार किया जाता है। इसलिए, इन मार्गों की सुरक्षा देश के

लिए महत्वपूर्ण है। हवाई यात्रा और परिवहन के युग में, पश्चिम एशिया भारत की पश्चिम की ओर जाने वाली हवाई सेवा में एक अभिन्न कड़ी बन गया है। मध्य एशिया के साथ हमारी बातचीत में ईरान एक महत्वपूर्ण पारगमन मार्ग के रूप में उभर रहा है।

11.5.1 भारत की 'पश्चिम की ओर देखो' नीति

स्वतंत्रता के बाद, गुटनिरपेक्षता की नीति के तहत भारत ने पश्चिम एशिया के उन देशों की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया जो प्रतिद्वंद्वी सैन्य गुटों में शामिल होने के लिए शीत युद्ध के दबाव का विरोध कर रहे थे। इससे नासिर के मिस्र और बाथिस्ट इराक के साथ घनिष्ठ संबंध बन गए। फिलीस्तीन ने अरब लोगों के बीच देश की एक अनुकूल छवि बनाई। इसने, ऐतिहासिक संबंधों और वाणिज्यिक संबंधों के साथ, भारत को इस क्षेत्र के लगभग सभी देशों के साथ जीवंत संबंध बनाने में मदद की है। 2005 में भारत ने 'पश्चिम की ओर देखो' नीति अपनाई, जिसे प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अपनाया गया, जिन्होंने इस क्षेत्र का कई बार दौरा किया है।

भारत और पश्चिम एशियाई देशों के बीच मजबूत सहयोग के लिए एक नया संदर्भ और उम्मीद है। पश्चिम एशियाई रणनीतिक सोच में मूलभूत बदलाव के पीछे कई कारक हैं। इक्कीसवीं सदी 'एशियाई सदी' है। पूर्वी एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और भारत दुनिया के गतिशील आर्थिक क्षेत्रों में से हैं। दुनिया के इस हिस्से में वैज्ञानिक और तकनीकी सफलताएं भी मिली हैं। सर्वप्रथम, दक्षिण और पूर्वी एशिया पश्चिम एशियाई तेल और गैस के मुख्य बाजारों के रूप में ट्रांस–अटलांटिक की जगह ले रहे हैं। यह वैश्विक ऊर्जा बाजार में सबसे महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन है। दूसरा, एशिया (मुख्य रूप से चीन और भारत) की बढ़ती आर्थिक और राजनीतिक प्रोफाइल और यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं के सामने आने वाली वित्तीय समस्याओं और ट्रम्प की 'अमेरिका पहले' नीति के कारण, पश्चिम एशिया सुरक्षा के लिए चीन, भारत और अन्य एशियाई शक्तियों पर पूरी तरह से निर्भर है। कई जीसीसी राज्यों ने भारत के साथ रक्षा सहयोग समझौते किए हैं। तीसरा, अरब वसंत और मिस्र, इराक, लीबिया और सीरिया में अंतहीन संकट के मद्देनजर, खाड़ी में राजशाही राज्य भारत और चीन को पश्चिमी राज्यों की तुलना में अधिक विश्वसनीय वार्ताकार माना हैं। चौथा, कट्टरपंथी और चरमपंथी धार्मिक और राजनीतिक ताकतें न केवल भारत के लिए बल्कि पश्चिम एशिया के लिए भी एक आम खतरा बन गया हैंय विशेष रूप से, निकटवर्ती जीसीसी देश भारत को धार्मिक उग्रवाद और आतंकवाद के खिलाफ सुरक्षा और स्थिरता के स्रोत के रूप में देखते हैं। अंत में, कुछ बुनियादी संस्थागत तंत्र स्थापित किए जा रहे हैंय अरब–भारत सहयोग मंच की पहली मंत्रिस्तरीय बैठक जनवरी 2016 में बहरीन की राजधानी मनामा में आयोजित की गई थी।

बोध प्रश्न 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) भारत और पश्चिम एशिया के बीच संबंधों को चित्रित करें।

....

....

....

....

11.5.2 भारत की नीति में मील के पत्थर

फिलिस्तीन मुद्दाः भारत ने इजरायल के साथ एक व्यवहार्य फिलिस्तीन राज्य के निर्माण के लिए नैतिक और राजनीतिक समर्थन दिया है। भारत अरब–इजरायल संघर्ष के मूल में है इस धारणा को साझा करता है स भारत फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन (पीएलओ) को ''फिलिस्तीनी लोगों के एकमात्र वैध प्रतिनिधि'' के रूप में मान्यता देने वाला पहला गैर–अरब राज्य बना और इसे जनवरी 1975 में नई दिल्ली में अपना कार्यालय खोलने की अनुमति दी। नई दिल्ली में पीएलओ कार्यालय को मंजूरी दी गई। मार्च, 1980 में इसे पूर्ण राजनयिक मान्यता दी गई । भारत ने नवंबर 1988 में फिलिस्तीन राज्य को मान्यता दी और नई दिल्ली में पीएलओ कार्यालय ने फिलिस्तीन राज्य के दूतावास के रूप में कार्य करना शुरू किया। फिलिस्तीनी राष्ट्रीय प्राधिकरण (पीएनए) की स्थापना के मद्देनजर, भारत ने पीएनए के साथ प्रभावी समन्वय सुनिश्चित करने के लिए 25 जून, 1996 को गाजा में अपना प्रतिनिधि कार्यालय खोला। भारत ने 1991 में मैड्रिड सम्मेलन शुरू होने के बाद से मध्य पूर्व शांति प्रक्रिया का समर्थन किया। इसने इजरायल और फिलिस्तीनियों के बीच सभी शांति समझौतों का भी समर्थन किया है। फिलीस्तीनी नेतृत्व भारत के लिए लगातार आगंतुक रहा है। भारत ने फिलिस्तीन क्षेत्रों में विकास कार्यों के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान की है। देश आईसीएसएसआर योजना के तहत फिलिस्तीनी छात्रों को छात्रवृत्ति और आईटीईसी कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए एक परियोजना प्रदान करता है।

इजराइलः भारत ने 1950 में यहूदी राज्य इजराइल को मान्यता दी थी। लेकिन, इसने 1992 में ही पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित किए। तब से दोनों देशों के बीच धार्मिक अतिवाद और वैश्विक आतंकवाद को लेकर सामान्य चिंताएं बढ़ गई है । इजरायल और भारत ने खुफिया जानकारी एकत्र कर उसे साझा करने तथा आतंकवाद विरोधी अभियानों में घनिष्ठ 'सहयोग' विकसित किया है। भारत इस्राइली हथियारों का बड़ा खरीदार बन गया है। भारत इजरायल से महत्वपूर्ण रक्षा प्रौद्योगिकियों का आयात करता है। सशस्त्र बलों और रक्षा कर्मियों के बीच नियमित आदान–प्रदान होता है। भारत ने हाल ही में नौसेना के लिए स्पाइक एंटी टैंक मिसाइल और बराक मिसाइलें खरीदी हैं, और बराक 8 मिसाइल प्रणाली का परीक्षण भी किया है। भारत की वायु सेना को अब इजरायल से दो फाल्कन एयरबोर्न सर्विलांस रडार खरीदने की मंजूरी का इंतजार है, जबकि सेना 321 लांचरों के साथ इजरायल के राफेल एडवांस्ड डिफेंस सिस्टम से 8,356 स्पाइक एंटी–टैंक गाइडेड मिसाइल खरीदने की मंजूरी का इंतजार

कर रही है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेष रूप से शुष्क भूमि खेती, बागवानी मशीनीकरण, संरक्षित खेती, बाग और चंदवा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में भारत–इजरायल सहयोग के लिए काफी संभावनाएं हैं। हाल के दिनों में उच्च स्तरीय द्विपक्षीय यात्राओं में तेजी आई है। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने अक्टूबर 2015 में इजरायल का दौरा किया। 2017 में इजरायल की यात्रा करने वाले पहले भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी है । 2018 में इजरायल के पीएम बेंजामिन नेतन्याहू भारत आए।

इराक संकटः भारत और इराक ने 1970 और 1980 के दशक के दौरान घनिष्ठ राजनीतिक और आर्थिक संबंध स्थापित किए। संयोग से, दोनों ने तत्कालीन सोवियत संघ– 1971 में भारत और 1972 में इराक के साथ मैत्री संधियाँ संपन्न कीं। एक समय में, इराक भारत की 30 प्रतिशत तेल जरूरतों का स्रोत था और वहां काम करने वाले 90,000 भारतीयों का घर था। यह एकमात्र अरब देश था जिसने कश्मीर पर भारतीय स्थिति का लगातार समर्थन किया। भारतीय फर्मों को सबसे बड़े अनुबंध मिले। इसलिए, 1991 में कुवैत पर इराकी आक्रमण ने भारतीय विदेश नीति के लिए एक कठिन विकल्प प्रस्तुत किया। परिणामी तेल की कीमतों में वृद्धि ने भारत के भुगतान संतुलन की स्थिति पर गंभीर दबाव डाला। भारत ने एक शांतिपूर्ण राजनीतिक समाधान का समर्थन किया, लेकिन अंततः संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 661 और 678 के साथ चला गया जिसने इराकी आक्रमण की निंदा की और इसके खिलाफ 'बल के प्रयोग' को अधिकृत किया। भारत ने कहा कि इराक के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र के ''नासमझी और अन्यायपूर्ण'' प्रतिबंध हटा दिए जाने चाहिए और वह इराकियों की पीड़ा के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। 2003 में इराक पर अमेरिकी आक्रमण के दौरान, नई दिल्ली ने अमेरिकी सैन्य पर कार्रवाई की जिसके कारण तेल की कीमतों पर इसका प्रभाव पड़ा स अमेरिका और 'इच्छुकों के गठबंधन' ने इराक पर आक्रमण किया; भारत ने कहा कि किसी भी सैन्य कार्रवाई के लिए संयुक्त राष्ट्र का अधिकार होना चाहिए था। भारत ने अपने सैनिकों को इराक भेजने से इनकार कर दिया। इराक पर इसके अवैध आक्रमण के लिए न तो संयुक्त राज्य अमेरिका का समर्थन किया और न ही इसकी निंदा की, भारतीय संसद ने प्रसिद्ध 'निंदा' प्रस्ताव पारित किया। यह प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार द्वारा एक बीच का रास्ता निकाला गया।

दिसंबर 2011 तक अमेरिकी सैन्य बल इराक से वापस आ गये, इराक युद्ध को समाप्त किया गया। युद्ध ने लाखों इराकी नागरिकों के लिए सांप्रदायिक हिंसा एवं विस्थापन और गरीबी का नेतृत्व किया। निर्वाचित नागरिक सरकारें अपनी संरचना और नीतियों में सांप्रदायिक साबित हुईं। एक घातक गृहयुद्ध छिड़ गया। नई ताकतों का उदय हुआय सबसे महत्वपूर्ण इस्लामिक स्टेट इन इराक एंड द लेवेंट (ISIL)। आईएसआईएल पूरे इराक और सीरिया में सक्रिय था और हजारों विदेशी जिहादियों को अपने रैंकों में आकर्षित किया।

2003 में इराक पर आक्रमण के बाद इराक के साथ भारत के व्यापार और आर्थिक संबंधों में गिरावट आई, लेकिन 2010 के बाद मुख्य रूप से कच्चे तेल के आयात में वृद्धि के कारण इसमें तेजी आई। 2016–17 में इराक भारत का 15वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था। तेल के अलावा, भारत इराक से कच्चे ऊन और सल्फर का आयात करता है और अनाज, लोहा और इस्पात, मांस और मांस उत्पाद, दवा उत्पाद, कृषि रसायन, सौंदर्य प्रसाधन, रत्न और गहने, चीनी मिट्टी की चीजें, मशीन टूल्स, विद्युत मशीनरी, परिवहन उपकरण, इलेक्ट्रॉनिक सामान का निर्यात करता है। 80 से अधिक भारतीय दवा कंपनियां दवाओं की आपूर्ति कर रही हैं और कई भारतीय अस्पताल इराकी मरीजों का इलाज कर रहे हैं।

हाल के वर्षों में दोनों देशों के बीच कई उच्च स्तरीय राजनीतिक यात्राएं हुई हैं। इराक के प्रधान मंत्री, नूरी अल मलिकी ने अगस्त 2013 में एक मजबूत व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए भारत में राजकीय यात्रा की, जिसके परिणामस्वरूप चार समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए – ऊर्जा क्षेत्र में सहयोगय दोनों विदेश मंत्रालयों के बीच सहयोगय दोनों पक्षों के विदेश सेवा संस्थानों के बीच सहयोगय और जल संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में सहयोग। इसके बाद मंत्री स्तरीय दौरे हुए।

ईरानः भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से ईरान पश्चिम एशिया का भारत सबसे करीब रहा है। 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद, दोनों देशों के बीच विभिन्न वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर एक बड़ी आम सहमति बन गई है। संयोग से, ईरान को लेकर भारत की धारणा रूसी स्थिति के अनुरूप है, जो ईरान के एक 'दुष्ट राज्य' या 'बुराई की धुरी' के रूप में अमेरिका के चरित्र चित्रण से भिन्न है। मध्य एशिया और रूस के साथ व्यापार के लिए ईरान भारत का सबसे व्यवहार्य पारगमन विकल्प है। नई दिल्ली–मास्को–तेहरान ने 2000 में सेंट पीटर्सबर्ग में उत्तर–दक्षिण कॉरिडोर के माध्यम से ईरान से रूस में भारतीय माल भेजने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। एक बार जब यह नया गलियारा पूरी तरह से चालू हुआ तो यह मध्य एशिया के साथ–साथ मध्य यूरोप में भी भारतीय व्यापार को बढ़ावा दे सकता है। भारत और ईरान ने नियमित रूप से उच्च स्तरीय यात्राओं का आदान–प्रदान किया है।

प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने 28–31 अगस्त, 2012 को तेहरान में आयोजित 16वें गुटनिरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) शिखर सम्मेलन में भाग लिया था। प्रधान मंत्री मोदी ने 22–23 मई, 2016 तक ईरान की एक मील का पत्थर द्विपक्षीय यात्रा की। दोनों देश ने 12 समझौता ज्ञापनोंध्समझौतों पर हस्ताक्षर किए। भारत, ईरान और अफगानिस्तान ने पारगमन और परिवहन पर एक त्रिपक्षीय समझौता किया। ईरान में चाबहार के रणनीतिक बंदरगाह को विकसित करने से मध्य एशिया और यूरोप के साथ व्यापार करने का समय और लागत आधी हो जाएगी। प्रधान मंत्री मोदी ने सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामेनेई और राष्ट्रपति रूहानी से मुलाकात की। ''सभ्यता संबंधी जुड़ाव, समकालीन संदर्भ'' शीर्षक वाला संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया। दिसंबर 2017 में ईरान के राष्ट्रपति हसन रूहानी ने चाबहार बंदरगाह के पहले चरण का उद्घाटन किया, जिससे पाकिस्तान को दरकिनार करते हुए भारत, ईरान और अफगानिस्तान को जोड़ने वाला एक नया रणनीतिक मार्ग खुल गया। यह पहला बंदरगाह है जिसे भारत अपने क्षेत्र के बाहर संचालित करेगा।

ईरान के साथ भारत का व्यापार ईरानी कच्चे तेल के आयात अत्यधिक करता है, जो इतने प्रतिबंधों के बावजूद भी जारी रहा। 2016–17 के दौरान दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 12.89 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। भारत पेट्रोलियम और उसके उत्पादों, अकार्बनिक और जैविक रसायनों, उर्वरकों, फलों और नट्स, कांच और कांच के बने पदार्थ, प्राकृतिक और सुसंस्कृत मोती, कीमती और अर्ध कीमती पत्थरों आदि का आयात करता है और चावल, चाय, लोहा और इस्पात, कार्बनिक रसायन, धातु, बिजली का निर्यात करता है। मशीनरी, फार्मास्यूटिकल्स, आदि

गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल (जीसीसी): जीसीसी का गठन मई 1981 में सऊदी अरब, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), कतर, बहरीन और ओमान की छह खाड़ी राजशाही द्वारा किया गया था। जीसीसी राज्य सभी सुन्नी और रूढ़िवादी इस्लामी राजतंत्र हैं, जो ईरानी शिया क्रांति का विरोध करते हैं और हाल के वर्षों में चरमपंथी इस्लामी समूहों और आतंकवादियों

के बढ़ते दबाव में आ गए हैं। इसने इन देशों और भारत के बीच एक साझा आधार बनाया है। जीसीसी भी भारत के शीर्ष व्यापारिक भागीदारों में से एक रहा है। भारत के तेल आयात का 42 प्रतिशत से अधिक छह खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) राज्यों से आता है; भारत के शीर्ष पांच तेल आपूर्तिकर्ताओं में से तीन जीसीसी राज्य हैं – सऊदी अरब कच्चे तेल का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है और कतर प्राकृतिक गैस का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। जीसीसी भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

जीसीसी भारत का सबसे बड़ा क्षेत्रीय व्यापारिक भागीदार है। 2017–18 में द्विपक्षीय व्यापार 104 अरब डॉलर था। 2017 में भारत के विदेशी मुद्रा प्रेषण में जीसीसी की हिस्सेदारी 54 प्रतिशत से अधिक 37 अरब डॉलर थी। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अगस्त 2015 में संयुक्त अरब अमीरात का दौरा किया, 34 साल बाद पहली बार भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा की गई। दोनों पक्षों ने अगले पांच वर्षों के लिए द्विपक्षीय व्यापार को 60 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा है और संयुक्त अरब अमीरात भारत के बुनियादी ढांचे के विकास में +75 बिलियन का निवेश करने का इरादा किया है।

खाड़ी देशों में भारतीय सबसे बड़े प्रवासी समुदाय हैं – अनुमानित 7.6 मिलियनः सऊदी अरब में 2.8 मिलियन और संयुक्त अरब अमीरात में 2.6 मिलियन। वे बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा आय भेजते हैं जो उभरती शक्ति भारत के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय नागरिकों की सुरक्षा भारत कि पहली प्राथमिकता है। सुरक्षा कारणों से अतीत में हजारों भारतीय प्रवासियों को संघर्ष–ग्रस्त इराक, कुवैत और यमन से बाहर निकालना पड़ा था। हाल के दिनों में इन पारंपरिक संबंधों में सुरक्षा और रक्षा सहयोग शामिल हो गया है। भारत ने आतंकवाद, मनी लॉन्ड्रिंग, साइबर सुरक्षा, संगठित अपराध, मानव तस्करी और एंटी–पायरेसी जैसे मुद्दों पर खाड़ी देशों के साथ 'रणनीतिक साझेदारी' की है।

बोध प्रश्न 4

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) जीसीसी के साथ भारत के संबंधों का वर्णन करें।

....

....

....

....

....

....

11.6 सारांश

मध्य एशिया और पश्चिम एशिया विभिन्न गतिशीलता वाले अलग–अलग क्षेत्र हैं। दोनों के भारत के साथ घनिष्ठ भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध हैं। इन दोनों क्षेत्रों में

भारत के महत्वपूर्ण राजनीतिक, सामरिक और आर्थिक हित हैं। मध्य एशिया प्रमुख वैश्विक और क्षेत्रीय शक्तियों के बीच तीव्र प्रतिद्वंद्विता के क्षेत्र के रूप में उभरा है। इसे 'नया महान खेल' कहा जाता है, जो मध्य एशिया पर नियंत्रण और विस्तार के लिए शाही ब्रिटेन और जारिस्ट रूस द्वारा खेले गए 'महान खेल' की याद दिलाता है। यह धार्मिक अतिवाद और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद में वृद्धि का भी गवाह है। इनका भारत की सुरक्षा पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

भारत पश्चिम एशिया, विशेष रूप से खाड़ी देशों में तेल आयात और प्रेषण पर बहुत अधिक निर्भर है, जो लगभग आठ लाख भारतीय नागरिकों का देश है। देशों में विशेष रूप से जीसीसी देशों में उच्च खपत स्तर और उदारीकरण तथा वैश्वीकरण के युग में भारत के बढ़ते निर्यात ने भारतीय व्यापार और उद्योग के लिए अपार अवसर पैदा किए हैं। निस्संदेह, इस क्षेत्र में भारत की उपस्थिति और प्रभाव इसके वैश्विक खिलाड़ी बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। पश्चिम एशिया भारत की 'विस्तारित पड़ोस' नीति के केंद्र में है।

11.7 कुछ उपयोगी सन्दर्भ

जिग्लर, चार्ल्स ई. (एड.), सिविल सोसाइटी एंड पॉलिटिक्स इन सेंट्रल एशिया, द यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ केंटकी, केंटकी, 2015।

इसहाक, रिको और एलेसेंड्रो फ्रिगेरियो, मध्य एशियाई राजनीति का सिद्धांतः राज्य, विचारधारा और शक्ति, पालग्रेव मैकमिलन, 2019।

बरघर्ट, डैनियल एल। और थेरेसा सबोनिस–हेल्फ, मध्य एशिया संप्रभुता के युग मेंः टैमरलेन की वापसी?, लेक्सिंगटन, यूएस, 2018

ओमेलीचेवा, मारिया वाई।, मध्य एशिया में लोकतंत्रः प्रतिस्पर्धी परिप्रेक्ष्य और वैकल्पिक रणनीतियाँ, यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ केंटकी, केंटकी, 2015

रॉय, मीना सिंह (सं.), पश्चिम एशिया में उभरते रुझानः क्षेत्रीय और वैश्विक प्रभाव, पेंटागन प्रेस, 2014

सिंह, संजय (सं.), वेस्ट एशिया इन ट्रांजिशन, इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस, पेंटागन प्रेस, 2018।

अभ्यंकर, राजेंद्र और आजाद पौरजंद, विरोध और संभावनाएंः पश्चिम एशिया और भारत, गेटवे हाउस रिसर्च पेपर नंबर 8, मार्च 2013।

11.8 आपके प्रगति अभ्यासों की जांच के लिए उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपका उत्तर उपखंड 11.2.3 पर आधारित होना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) आपका उत्तर उपखंड 11.3.3 और 11.3.5 पर आधारित होना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

1) आपका उत्तर खंड 11.5 और उपधारा 11.5.1 पर आधारित होना चाहिए।

बोध प्रश्न 4

1) आपका उत्तर उपखंड 11.5.2 पर आधारित होना चाहिए।

11.9 अंतिम प्रश्न

1) मध्य एशिया के भू–सामरिक महत्व की व्याख्या करें।
2) मध्य एशिया के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंधों की व्याख्या करें।
3) फिलिस्तीन मुद्दे के प्रति भारत की नीति पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4) उभरते भारत–इजरायल संबंधों पर चर्चा करें।
5) इराक संकट पर भारत की प्रतिक्रिया पर टिप्पणी कीजिए।
6) मध्य एशिया के साथ भारत के संबंधों के लिए ईरान का क्या महत्व है?
7) मध्य एशिया में भारत की सुरक्षा चिंताओं पर टिप्पणी करें।
8) भारत और मध्य एशिया के बीच आर्थिक सहयोग के प्रमुख क्षेत्र कौन से हैं?
9) मध्य एशिया के साथ भारत की आर्थिक बातचीत में मुख्य बाधाओं की पहचान करें।
10) पश्चिम एशिया में भारत की मुख्य सुरक्षा और आर्थिक चिंताएँ क्या हैं?

सुझाए गए रीडिंगः

जिग्लर, चार्ल्स ई. (एड.), सिविल सोसाइटी एंड पॉलिटिक्स इन सेंट्रल एशिया, द यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ केंटकी, केंटकी, 2015।

इसहाक, रिको और एलेसेंड्रो फ्रिगेरियो, मध्य एशियाई राजनीति का सिद्धांतः राज्य, विचारधारा और शक्ति, पालग्रेव मैकमिलन, 2019।

बरघर्ट, डैनियल एल। और थेरेसा सबोनिस–हेल्फ, मध्य एशिया संप्रभुता के युग मेंः टैमरलेन की वापसी?, लेक्सिंगटन, यूएस, 2018

ओमेलीचेवा, मारिया वाई।, मध्य एशिया में लोकतंत्रः प्रतिस्पर्धी परिप्रेक्ष्य और वैकल्पिक रणनीतियाँ, यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ केंटकी, केंटकी, 2015

रॉय, मीना सिंह (सं.), पश्चिम एशिया में उभरते रुझानः क्षेत्रीय और वैश्विक प्रभाव, पेंटागन प्रेस, 2014

सिंह, संजय (सं.), वेस्ट एशिया इन ट्रांजिशन, इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस, पेंटागन प्रेस, 2018।

अभ्यंकर, राजेंद्र और आजाद पौरजंद, विरोध और संभावनाएंः पश्चिम एशिया और भारत, गेटवे हाउस रिसर्च पेपर नंबर 8, मार्च 2013।